रविवार 9 फरवरी, 2020

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: अय्यूब 33 : 4

"मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 104 : 24, 30, 31**
I यूहन्ना 1: 1-3

24 हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं! इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है।

30 फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है॥

31 यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे, यहोवा अपने कामों से आन्दित होवे!

1 उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ।

2 (यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ) ।

3 जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 139: 7-10, 14 (*से* :)

7 मैं तेरे आत्मा से भाग कर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

8 यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है!
9 यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़ कर समुद्र के पार जा बसूं,
10 तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।
14 मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं।

2. यूहन्ना 4: 24 (*से*:)

24 परमेश्वर आत्मा है।

3. I यूहन्ना 4 : 13

13 इसी से हम जानते हैं, कि हम उस में बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है।

4. रोमियो 8 : 2 (यह), 6, 9-11, 13-17, 35, 37-39

2 ... जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।
10 और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।
11 और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।
13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।
14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।
15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥

35 कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?
37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
39 न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

5. I यूहन्ना 1 : 5-7

5 जो समाचार हम ने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।
6 यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते।
7 पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

6. मत्ती 4 : 23, 24

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

7. मत्ती 15 : 30

30 और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंड़ों, और बहुत औरों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उस के पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया।

8. प्रेरितों के काम 9 : 36-42

36 याफा में तबीता अर्थात दोरकास नाम एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुतेरे भले भले काम और दान किया करती थी।

37 उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहला कर अटारी पर रख दिया।
38 और इसलिये कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहां है दो मनुष्य भेजकर उस ने बिनती की कि हमारे पास आने में देर न कर।
39 तब पतरस उठकर उन के साथ हो लिया, और जब पहुंच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए; और सब विधवाएं रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुई: और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उन के साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं।
40 तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और लोथ की ओर देखकर कहा; हे तबीता उठ: तब उस ने अपनी आंखे खोल दी; और पतरस को देखकर उठ बैठी।
41 उस ने हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया।
42 यह बात सारे याफा मे फैल गई: और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया।

9. II कुरिन्थियों 3 : 17, 18 (हम)

17 प्रभु तो आत्मा है: और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।
18 ... हम सब, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥

10. गलातियों 6 : 8

8 क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

11. यूहन्ना 6 : 63

63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 467 : 3 (यह)-4

इस विज्ञान की पहली मांग है, "दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥"

2. 266: 27-29 (*से 1st.*)

मनुष्य आत्मा का विचार है; वह प्रकाश के साथ ब्रह्मांड को रोशन करते हुए, सुंदर उपस्थिति को दर्शाता है।

3. 88 : 14 *केवल*

विचार आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत हैं।

4. 361 : 16-18

जैसे पानी की एक बूंद सागर के साथ है, सूर्य के साथ प्रकाश की एक किरण, यहां तक कि भगवान और मनुष्य, पिता और पुत्र, अस्तित्व में एक हैं।

5. 468 : 8-15

सवाल। — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर। —पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

6. 346 : 2-5

जब मनुष्य को भगवान की छवि के रूप में बनाया गया है, तो यह पापी और बीमार नश्वर मनुष्य नहीं है, जिसे भगवान की समानता को दर्शाते हुए, बल्कि संदर्भित किया जाता है।

7. 480 : 1-7

जब क्रिएस्टियन साइंस में आत्मा का पदार्थ दिखाई देता है, तो पदार्थ की कुछ भी मान्यता नहीं होती है। जहां परमात्मा की आत्मा है, और जहां परमात्मा नहीं है वहां कोई भी जगह नहीं है, तो बुराई कुछ भी नहीं है, - आत्मा के विपरीत। यदि कोई आध्यात्मिक प्रतिबिंब नहीं है, तो केवल रिक्तता का अंधेरा रहता है और न कि स्वर्गीय संकेतों का एक निशान।

8. 485 : 14-27

आत्मा में पदार्थ से धीरे से उभरें। सभी चीजों के आध्यात्मिक परम को विफल करने के लिए नहीं सोचें, बल्कि बेहतर स्वास्थ्य और नैतिकता के माध्यम से और आध्यात्मिक विकास के परिणामस्वरूप आत्मा में स्वाभाविक

रूप से आएं। मृत्यु नहीं, बल्कि जीवन की समझ मनुष्य को अमर बनाती है। यह विश्वास कि जीवन पदार्थ या आत्मा शरीर में हो सकता है, और वह मनुष्य धूल या अंडे से पैदा होता है, वह नश्वर त्रुटि का परिणाम है जो मसीह, या सत्य, होने के आध्यात्मिक नियम को पूरा करके नष्ट कर देता है, जिसमें मनुष्य परिपूर्ण है, जैसा कि "तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥" यदि विचार अन्य शक्तियों पर अपना प्रभुत्व प्राप्त करता है, तो यह शरीर की अपनी सुंदर छवियों को रेखांकित नहीं कर सकता है, लेकिन यह उन्हें संक्रमित करता है और रोग और पाप नामक विदेशी एजेंटों को बचाता है।

9. 301 : 17-23, 24-29

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे। ... भ्रम, पाप, बीमारी और मृत्यु भौतिक अर्थों की झूठी गवाही से उत्पन्न होती है, जो कि अनंत आत्मा की केंद्रीय दूरी के बाहर एक निश्चित दृष्टिकोण से, मन और पदार्थ की एक उलटी छवि प्रस्तुत करता है और सब कुछ उल्टा हो जाता है।

10. 303 : 21-15

यह विश्वास कि पीड़ा और आनंद, जीवन और मृत्यु, पवित्रता और अपवित्रता, मनुष्य में घुलमिल जाती है, - वह नश्वर, भौतिक मनुष्य भगवान की समानता है और वह स्वयं एक निर्माता है, - एक घातक त्रुटि है।

ईश्वर, स्वयं की छवि और समानता के बिना, एक गैर-बराबरी, या मन अप्रभावित होगा। वह अपने स्वयं के स्वभाव के गवाह या सबूत के बिना होगा। आध्यात्मिक मनुष्य ईश्वर की छवि या विचार है, एक ऐसा विचार जो न तो खो सकता है और न ही अपने ईश्वरीय सिद्धांत से अलग हो सकता है। जब भौतिक ज्ञान के प्रति अनुभूतियां हुईं, तब प्रेरितों ने यह घोषणा की कि कुछ भी उसे ईश्वर, मीठे भाव और जीवन और सत्य की उपस्थिति से अलग नहीं कर सकता।

यह ज्ञान और असत्य विश्वास है, भौतिक वस्तुओं पर आधारित है, जो आध्यात्मिक सौंदर्य और गुडई को छिपाते हैं। यह समझ में आया, पॉल ने कहा: "न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रादित्य, न वर्तमान, न भविष्य, न समृति, न ऊंचाई, न यशैरी और न नो और सृष्टि, हमें भगवान के प्रेम से ...।" अलग कर संभव है। " यह क्रिश्चियन साइंस का सिद्धांत है: उस दिव्य प्रेम को उसकी अभिव्यक्ति, या वस्तु से वंचित नहीं किया जा सकता है; वह आनन्द दुःख में नहीं बदल सकता, क्योंकि दुःख आनन्द का स्वामी नहीं है; वह अच्छाई कभी स्पष्ट नहीं कर सकता; वह पदार्थ कभी भी मन उत्पन्न नहीं कर सकता है और न ही जीवन का परिणाम मृत्यु है। पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है

11. 476 : 9-15, 32-4

ईश्वर मनुष्य का सिद्धांत है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है। इसलिए मनुष्य न तो नश्वर है और न ही भौतिक। नश्वर गायब हो जाएंगे, और अमर होंगे, या भगवान की संतान, मनुष्य के एकमात्र और अनन्त सत्य के रूप में दिखाई देंगे। मुर्दा भगवान के बच्चे नहीं हैं। उनके पास कभी भी पूर्ण राज्य नहीं था, जिसे बाद में फिर से हासिल किया जा सकता है।

यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया।

12. 470 : 32-5

ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार, विज्ञान में अविनाशी हैं; और विज्ञान न तो कोई चूक जानता है और न ही सद्भाव में लौटता है, लेकिन ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें ईश्वर और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, जो उसके शाश्वत इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

13. 516 : 2-4, 21-23

जैसे दर्पण में स्वयं का प्रतिबिंब दिखाई देता है, वैसे ही आप आध्यात्मिक होने के कारण भगवान के प्रतिबिंब हैं।

भगवान के साथ सहवास और शाश्वत के रूप में आदमी और औरत हमेशा के लिए, अनंत पिता-माता भगवान की महिमा में परिलक्षित होते हैं।

14. 476 : 18-22

पाप, बीमारी, और मृत्यु को उन तथ्यों को जगह देनी होगी जो अमर आदमी के हैं।

हे नश्वर, इसे सीखो, और ईमानदारी से मनुष्य की आध्यात्मिक स्थिति की तलाश करो, जो सभी भौतिक स्वार्थों से परे है।

15. 477 : 20 (पहचान**)-25**

पहचान आत्मा का प्रतिबिंब है, जीवित सिद्धांत, प्रेम के विविध रूपों में प्रतिबिंब है। आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी आत्मा से हीन कुछ भी नहीं कर सकती है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6